शरत साहित्य - अभय शर्मा

शरत चंद्र चट्टोपाध्याय वह विशेष व्यक्तित्व हैं जिन्हें वास्तव में मैने सबसे ज्यादा पढ़ा है, यहां किन्ही तीन चार किताबों-उपन्यासों के नाम गिनाने से काम नही चलेगा । शरत बाबू की तो हर कृति निराली है। कम से कम मुझे इसमें शक की कोई गुंजाइश नजर नही आती। पसंद अपनी अपनी खयाल अपना अपना, मेरी राय में उनकी अपनी अलग ही पहचान है। जिन्होने शरत बाबू को पढ़ा या समझा है उन्हे मेरी बात मिथ्या से परे सच ही जान पड़ेगी ।

कुछ मायनों में शरतचंद्र का साहित्य इसलिये भी अनूठा है कि उनके मुख्य पात्र अधिकतर स्त्री-उन्मूलन से संबंधित ही नही वरन उन्ही भावनाओं से प्रेरित होकर लिखे जान पड़ते है । स्वयं मुझे स्त्री हदय को इतने नजदीक या करीब से जानने का पहला अवसर उनके उपन्यासों में ही प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त शरत साहित्य से लगाव-झुकाव का एक और कारण यह भी हो सकता है कि उनकी रचनाओं में असलियत साफ झलकती है। वास्तविकता को किस तरह सीधे सरल शब्दों में पिरोया जाता है यह काम उनसे बढ़कर अन्य कोई नही कर पाया। संभव है सरस्वती मां की उन पर विशेष अनुकंपा रही हो, उनकी लेखनी से जैसे साक्षात फूल ही बरसते थे, पाठक को बांध कर रखने की कला में उनका लोहा आज भी हर कोई मानता है । शरत बाबू जटिल से जटिल बात को ऐसी चतुराई से कह जाते कि पता ही नही चलता कि कितनी गूढ़ बात कह गए। उनके उपन्यास के पात्रों के साथ अपने आपको जोड़ कर हर कोई जैसे उपन्यास में खो सा जाता है। एक बार पढ़ना प्रारंभ करने के बाद समाप्त किये बिना चैन ही नही पड़ता । यही कुछ बाते है जिनके द्वारा एक आम उपन्यासकार या महान कथाकार को परिभाषित किया जाता है। शरत चंद्र चट्टोपाध्याय की महान कृतियों में देवदास, परिणीता, विराजबहू, श्रीकांत, शेषप्रश्न एवं चरित्रहीन सर्वाधिक लोकप्रिय हुई।

इस लेख का एक विशेष प्रयोजन यह भी है कि आज की युवापीढ़ी शरत साहित्य द्वारा चरित्र निर्माण के मार्ग में सहयोग हासिल करे।